REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

सामाजिक और धार्मिक सुधारणा में आंदोलन में 'दुर्गाराम महेताजी' का प्रदान

डा.निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.

⁂ विधवा विवाह का प्रचार :

दुर्गाराम की पहली शादी इ.स.१८३१ में २२ साल की उमर में हुआ। सात साल के लग्नजीवन के बाद इ.स.१८३८ में उनकी पत्नी की मृत्यु हुई। पत्नी के अवसान के बाद उनको अपनी विधुरावस्था और विधवाओं की यातना का ख्याल आया। उस समय १५ से २५ साल की युवितयाँ भी विधवा होती। उनको भयंकर दुःख, अपमान और वेदना सहन करनी पडती। इसीलिए उन्होने विधवाओ की स्थिति सुधारने के लिये विधवा विवाह का प्रचार शुरु किया। अलग-अलग चौटाए और शेरीओ में जाकर वह अपमान या निंदा की परवाह करे बगेर विधवा विवाह के लिए भाषण देने लगे। कुछ लोग उन्हो कटाक्ष में कहते कि आपके घर में मासा-मासी विधुर है, उनकी शादी करवाओ तब वह गुस्से बगेर कहते कि वह बुढे हो गये है। मे तो जवान हुं बालविधवाओ का पुनः लग्न का प्रचार करता हूँ।

इ.स.१८४० में सुरत में मिशनरीओने इंग्लीश स्कूल शुरु की थी उसमें ख्रिस्ती धर्म और बाइबल की शिक्षा भी फरजियात दी जाती। एक पादरी मोन्टगोमरी की प्रेरणा से नवसरयानजी माणेकजी पारेख नामक पारसी शिक्षक ने अपना धर्म छोडकर ख्रिस्ती धर्म इख्तीयार किया। इसीलिए सरत के लोगो में यह हाहाकार मच गया। पारसी अंग्रेज तरफ और मिशनरीओ की इंग्लीश स्कूल का बहिष्कार हो ऐसा लगने लगा। इसीलिए दुर्गाराम महेताजी ने नसरयानजी को समझाकर उनके मूल पारसी धर्म में वापिस दाखिल किया।

⁂ मानव धर्म सभा :

इ.स.१८४४ की २२ वीं जून को दुर्गाराम महेताजी ने एक क्रांतिकारी पगला लीया सुरत में 'मानव धर्म सभा' की स्थापना की। इस सभा के प्रमुख वह खुद बने। दुर्गाराम महेताजी खुद इसकी नोंध लिखते और उसका दफ्तर अपने पास रखते। उसमें से आधा दफ्तर चौटा की स्कूल की आग में जल गया और आधा दफ्तर महीपतराम रुपराम नीलकंठ के हाथ में आया उस पर से उन्होने 'दुर्गाराम चरित्र' नामक पुस्तक लिखा। दुर्गाराम ने सभी धोर्म से ज्यादा मानवधर्म को महत्व दिया था। इस सभा का मुख्य उद्देश मानवधर्म जानने का, समझने का, समझाने का और उसका प्रचार करने का था। मूर्तिपूजा बंध करनी, ज्ञातिभेद दूर करना, अस्पृश्यता नाबूद करनी आदि विषयो पर इस सभा में चर्चा होती और प्रवचन दिये जाते। उपरांत भूतप्रेत जादू और तांत्रिक क्रियाकांड के विरुद्ध झुंबेश उठाकर भूवा और जादुगरो को पडकार दिया था।

⁂ अस्पृश्यता विशे जेहाद या आंदोलन :

दुर्गाराम अस्पृश्यता के विरोधी थे। इ.स.१८५४ की छट्ठी जुलाइ के दिन मानवधर्म सभा में इस विषय की चर्चा करके उन्होने बताया था कि 'कोइ इन्सान जन्म से भंगी या चांडाल नथी।' जन्म चांडाल नही कर्म चंडाल है। जबकि भंगी के हाथ में नर्क का कटोरा हो या उसने गंदे कपडे पहने हो तब उसको स्पर्श नहि कर सकते, लेकिन जब सुफा-सुतरा होकर अपने पास आये तब स्पर्श करने में कोई दिक्कत नहीं। सभी लोगो के देह को एक जैसा गिनना पडेगा। जिस व्यक्ति के योग से इन्सान को दुःख हो उसकी अपवित्र गीनना और जिस चीज से इन्सान की बुद्धि निर्मण रहे उसको पवित्र गीनना। दुगाराम के अस्पृश्यता के बारे में यह विचारो में उनकी मानवता और हृदय की विशालता देखने को मिलती है। जबकि समय का रुढिचूस्त समाज ऐसे विचारो को समझने और अपनाने को तैयार न था। उच्च वर्ण के लोग जानते थे कि अनजाने में हरिजनों का स्पर्श हो जाये तो वह हरिजन के उपर गुस्सा होते और घर जाकर स्नान कर लेते। हरिजन और भंगीओं की स्थिति बहोत त्रासजनक थी। उनके उपर अनेक जात के अंकूश और बंधन थे।

⁂ ज्ञानप्रचार की प्रवृत्तियाँ तथा राजकीय जुल्म या शोषण के विरोधी :

सुरत में समाजसुधारा की प्रवृत्ति के साथ ज्ञान प्रचार की भी कुछ प्रवृत्तियाँ होती। ए.के.फोबर्स की सूचना से मीर मुइनुद्दीनखान और दूसरे कुछ हिन्दु, मुस्लिम तथा पारसी श्रीमंतो की मदद से

इ.स.१८५० की ४ जून को सुरत में 'धी लिटररी सोसायटी' की स्थापना हूई। उसी समय में 'अेड्रस लायब्रेरी' की स्थापना की।

दुर्गाराम ने स्पष्ट बताया कि 'राजा प्रजा के उपर जुल्म करे तो प्रजा को उसके सामने लडकर साज करनी चाहिएये तथा उसका राज्य दूसरो को सोंपना चाहिये।' जुल्मगार राजाओ से प्रजा की रक्षा हो उसमें बडा परोपकार है। राजा का राज्य प्रजा के कल्याण के लिये है।

⁂ सामाजिक और धार्मिक सुधारणा आंदोलन में कवि 'नर्मद शंकर दवे' का प्रदान :

समाज सुधारा की चलवल में नर्मद का सबसे बडा प्रदान था। समाजसुधारको के सैन्य का यह मुख्य सेनापति थे। मध्ययुग में रजपूत सेनाओ के आगे 'कडखेद' चलता, वह 'कडखा' बोलकर रजपूत सैनिको में लडने के लिए शूरतान प्रगटाते। नर्मद खुद को समाज की बदी के सामने लडने की शूरतान प्रगट करनार 'कडखेद' तरीके पहचानते। नर्मद ने अनेक क्षेत्रो में काम किया था। समाजसुधारक के तौर पर उन्होने खंडनात्मक और साहित्यकार तरीके रचनात्मक कामगीरी की। दोनो प्रकार की प्रवृत्ति में उन्होने विक्रमसर्जक काम किया। नर्मद गद्यकार, कवि, नाट्यकार, पत्रकार, इतिहासकार और कोशकार थे। क्रांतिकारी को अपना वर्चस्व गुमाकर खुवार होने की तैयार रखनी पडती है इस तरह नर्मद भी रुढीचुस्त समाज और दंभी धर्मगुरुओ के सामने लडते-लडते खुवार हो गये थे।

⁂ ज्ञाति के कुरिवाज के सामने विरोध :

इ.स.१८५९ से नर्मदाशंकर के मन में समाजसुधारा के बारे में सोचने लगे और उसके बारे में लिखने का कार्य किया। अपनी ज्ञाति के रिवाज के सामने उन्होने अपने मासी के पुत्र गुलाबनारायण और फप्पी के पुत्र दोलतराम के वकील की मदद से बलवा किया। उनकी ज्ञाति के खाने के वक्त नागर गृहस्थी स्त्रीयां पूरा कपडा पहनकर खाने बेठती जबकी नागर भिक्षुक की स्त्रीयाँ कांचली (चोली या ब्लाउझ) निकालकर सिफ अबोटा पहनकर बेठे ऐसा बरसों पूराना रिवाज तोडकर अपनी भिक्षुक ज्ञाति की स्त्रीयो को कांचली पहनाकर खाने बीठाया इसीलिए गृहस्थ ज्ञाति के ब्राह्मण गुस्सा हुए। कुछ गृहस्थ स्त्रीयाँ खाने को त्याग करके खडे हो गई फिर भी नर्मदाशंकर की हिंमत से ज्ञाति में फली हुई यह कुप्रथा को दूर करके अपनी ताकत और निर्भयता का परिचय दिया। उसके बाद उन्होने 'वैधव्य चित्र' नामक विस्तृत काव्य लिखकर विधवाओ की करुण और दयाजनक स्थिति का ख्याल दिया। उनका यह काव्य बहोच प्रचलित और लोकप्रिय बना इससे सुधारको की विधवा विवाह की झुंबेश आगे बढी।

⁂ महाराजा लायबल केस :

नर्मद जान का जोम खेडकर जाहेर सभा में जदुनाथजी के सामने विवाद किरने लगया यह उनकी साहसवृत्ति, शूरवीरता और मर्दानगीभरा कृत्य था। वह कायर या डरपोक न था। 'सामाजिक और धार्मिक सुधारक के तौर पर उनका यह कार्य था।' इस कार्य से उन्होने मुंबइ के सभो गुजराती हिंद समाज को हलबली हो गई। इस कार्य के लिये उनको 'गुरात के ल्युथर' की उपमा दी गई। जदुनाथजी ने विधवा लग्न के बदले शास्त्रो इश्वररचित है या नहि ऐसा प्रश्न करके चर्चा को दूसरे विषय पर चढा दिया लेकिन सुधारको ने उनकी टीका करने का नहीं छोडा।

करशनदास मूलजी ने २१वीं अक्टूबर, १८६० के रोज 'सत्यप्रकाश' में 'हिंदुओ के असल धर्म और अभी के पाखंडी मत' नामक लेख लिखा। उसमें उन्होंने लिखा कि महाराज का पंथ पाखंड से भरा हुआ तथा भोले लोगो को छेतरने का है। जदुनाथ महाराज अगर आप धर्म को फलाना चाहते हो तो आप खुद अच्छे आचरण पकडकर आपके दूसरे महाराजो को उपदेश करो। धर्मगुरु जब तक व्यभिचार के समन्दर में डूबे रहंगे तब तक उनको धर्म का बोध हो नहीं सकता, यह सच मानकर चलना।

तारीख २५ वीं जान्युआरी, १८६२ के रोज मुंबई की सुप्रिम कोट में दो न्यायाधीश ने इस केश के दावे के सुनवणी शुरु की। उसमें वादी के तौर पर जदुनाथजी ब्रीजरतनजी और प्रवितादी के तौर पर सत्यप्रकाश के मालिक करशनदास मुलजी तथा मुद्रक के छोटे भाई रुस्तमजी राणी के थे। मुंबइ के महाराज जीवणलालजी ने वैष्णव महाराज को न्याय अदालत में जुबानी देने न जाना पडे उसके लिए अपने अनुयायीओ के पाससे प्रतिज्ञा लेनी पडी थी। जबकी इस अदालत में जदुनाथजी खुद सामने चलकर बदनक्षी का दाडा करने गये थे। २८ दिन तक यह केस चला। इस केस में करशनदासजी की तरफण में कवि नर्मद, दाक्तकर भाउ दाजी, धीरजराम, झवेरीलाल, उमीयाशंकर, शेठ मंगलदास नाथुभाइ आदि लोगो ने जुबानी दी। आखिर दोनो न्यायाधिशोने इस मुकद्दमे में करशनदासजी मुलजी और नानाभाइ राणीना को निर्दोष घोषित किया। जदुनानथजी ने करशनदासजी को खर्च पेटे रु.११५०० देने का कोटने हुकम किया।

⁂ दंभ-वहेम, जुठ्ठाणा के सामने पडकार फकने के लिए 'डांडिया' का प्रकाशन :

इ.स.१८६४ में सप्टेम्बर के अंदर नर्मदे 'डांडियां' सामायिक का प्रकाशन शुरु किया था। सुधारा के क्षेत्र में उसका यह दूसरा विराट कदम था। वहेम, जूठ, ढोंग, अप्रमाणिकता आदि के उपर प्रहार करने के लिए उन्होंने सामयिक शुरु किया था। शुरु में यह पाक्षिक था और बाद में वह साप्ताहिक बना। इ.स.१८६४ से इ.स.१९६९ तक पांच साल तक उसका प्रकाश हुआ था।

इस पत्र में भलभली चरमबंधीयाँ, श्रीमंत और सरकारी अधिकारीयों की परवाह करे बगेर उनको क्षतिओं को उन्होने उडा दी। वह बदनक्षी के डर से गभराते न थे। कुरुढ़ियाँ, जड मान्यताएँ, शेर का सट्टा, वहम और अंधश्रद्धा की आग-झरती बोली में टीका किया हुआ 'विडीयो' जैसे दांडी लोगो को इस तरह यह समाज के दुष्ट तथा दंभीओं से जाग्रत रखते थे। वेधक भाषा और सनसनाटी पूर्वक पत्रकारत्व की उन्होने शुरुआत की। 'डांडियो' लोगो में बहोत लोकप्रिय

हुआ। गुजरात और काठियावाड में भी उसकी ख्याति फली। 'डांडियो' के कारण नर्मद की कुछ लोगो के साथ दुश्मनावट हुई लेकिन उन्होंने निर्भयता से 'डांडियो' पत्र चलाया। लोगो को समाज के अनिष्टों का भान कराने में 'डांडियो' का प्रदान अनुपम था।

❋ विधवा विवाह का प्रचार एक विधवा को आश्रय और दूसरी विधवा के साथ शादी :

नर्मद एक हिंमतबाज सुधारक था। वह अपने विचार, लेख, प्रवचन और कार्यो से रुढिचुस्त समाज को उपराउपरी नीव्र आघात देते थे। समाज के सामने एक लडाइ पूरी हो तो दूसरी लडाइ पूरी ताकात से शुरु करते। दुर्गाराम ने विधवाविवाह का प्रचार शुरु किया लेकिन दूसरी पत्नी के तौर पर कुंवारी कन्या मिलने पर उन्हें विधवा विवाह का प्रचार पडतर रखने की उनके सुसर की शरत स्वीकार कर ली। नर्मद की प्रथम पत्नी गुलाब गौरी की मृत्यु होने से उन्होने डाही गौरी नामक कुँवारी कन्या के साथ इ.स.१८५६ में दूसरी शादी की।

इ.स.१८६५-६६ में नर्मद सवितागौरी नामक अपनी ज्ञाति की एक युवान विधवा के परिचय में आये। उसके साथ प्रेम होने से उसने शादी के बगेर अपने घर में आश्रय दिया। उसकी ज्ञाति ने बहोत विरोध किया। धीरे धीरे यह विरोध बैठ गया लेकिन इ.स.१८६९-७० में नर्मदगौरी नामक दूसरी विधवा के परिचय में आये। ज्ञाति और समाज के विरोध के बीच उनके साथ शादी की और अपने घर में उन्हें रखा। नर्मद ने उघाडे छोग विधवा शादी करके अपने 'प्रेमशौर्य' के मुद्रालेख को जीवन में सार्थक किया है।

❋ संदर्भ ग्रंथ :

- शाह अंजना बी., ''गांधीजी और गुजरात में समाज सुधारणा'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड गुजरात राज्य, अहमदाबाद, पहली आवृत्ति, १९८७
- शास्त्री हरिप्रसाद जी., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-८, भो.जे.विद्याभवन, संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद, १९८१
- आचार्य नवीनचंद्र ए., ''गुजरात के धर्म संप्रदान'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद, पहली आवृत्ति, १९८३
- दवे नर्मद शंकर एल., ''सुरत की मुखतेसर हकीकत'', मेघाणी प्रकाशन, सुरत, पहली आवृीत्त, १९९०

डा.निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.